रिकॉर्ड:- ले लो ले लो दुवायें माँ-बाप. .. ओम शान्ती प्रातःक्लास 12-3-67

हर एक घर में माँ-बाप तथा दो चार बच्चे होते ही है फिर आशीर्वाद मांगते है। वो तो है हद की बात। यह गीत हदके लिये ही गाया हुआ है। वेहद का किसको भी पता नही है। अब तुम बच्चे जानते हो कि हम वेहदके बाप के बच्चे और बच्चियां है। शिव बाबा के है बच्चे। और फिर ब्रह्मा के है बच्चे और बच्चियाँ। कितने ढेर बच्चे और बच्चियां है। वो तो मात-पिता होते है हद के। ले लो दुआयें हद के मात-पिता की। यह है वेहद का माँ-बाप। वो हदके माँ-बाप भी बच्चों को सम्भालते है। फिर टीचर पढ़ाते है। अब तुम बच्चे जानते हो यह है वेहद का माँ-बाप। वेहद का टीचर, वेहद का सतगुरु। सुप्रीमफादर सुप्रीमटीचर सुप्रीम गुरु अर्थात सत बाप सत टीचर सत गुरु। सत ही सत बोलने वाला है। सत ही सिखाने वाला है। बच्चे भी नम्बरवार तो होते है नां। लौकिक घर में भी दो-चार बच्चे होते है तो उनकी कितनी सम्भाल करनी पड़ती है। यहाँ कितने ढेर बच्चे है। कितने सेन्टर्स से बच्चों के समाचार आते है। यह बच्चा ऐसा है यह शैतानी करता है। यह तंग करता है। यह विघ्न डालता है। फुरना तो इसमें बाप को रहेगा नां। प्रजापिता तो यह है नां। कितने ढेर बच्चों की ख्यालात रहती है। तब बाबा कहते है कि तुम बच्चे अच्छी रीती शिव बाबा की यादमें रह सकते हो। इनके ऊपर तो कितना हंगामा है। यह प्रबन्ध करना, आबू में कुछ प्रबन्ध हो, कोई काम करने वाला लायक बच्चा नही है। तो कितना इनको फुरना रहता होगा। हजारों फुरना होता है। एक फुरना तो है ही है हजारों दूसरे भी रहते ही है। कितने ढेर बच्चों को सम्भालना पड़ता है। माया भी बड़ी दुश्मन है नां। अच्छी रीती कोई-2 की खाल उतार लेती है। कोई को नाक से पकड़, कोई को चोटी से पकड़ लेती है। इतने सभी का विचार तो करना पड़ता है नां। फिर भी वेहदके बाप की याद में रहना पड़े। हम आत्मा नंगी आई है फिर नंगे ही जाना है। तुम हो वेहद के बाप के बच्चे। जानते हो कि हम क्यों नही वेहद के बाप की श्रीमत पर चल कर वेहद का वर्सा पा लेवें। सब तो एक रस चल नही सकते है क्यों कि राजाई स्थापन हो रही है नां। यह तो हो गई बादशाही। पहले पहले बादशाह यह बनते है श्रीमत पर चलके। यह राजाई कैसे स्थापन हो रही है यह कोई और की बुद्धि में भला आवे ही कैसे। यह है बहुत ऊंच पढ़ाई। बादशाही मिल गई फिर पता भी नही पड़ता है कि यह राजाई कैसे स्थापन हुई। यह राजाई का स्थापन होना बहुत वण्डरफुल है। अब तुम अनुभवी हो। पहले इनको भी पता थोड़ेही था कि हम कौन थे। फिर कैसे 84 जन्म लेते है। अब समझ में आया है। तुम भी कहते होंगे बाबा आप वो ही हो। यह बहुत समझने की बातें है। इस समय ही आप आकर सब बातें समझाते है। इस समय भल कोई कितना भी लखपति करोड़पति हो बाप कहते है वो पैसे आदि सब मिट्टी में मिल जावेंगे। बाकी समय ही कितना है। दुनियाँ की खबरें तो रेडियो में अथवा अखबारों आदि में तो सुनते ही नही हो कि क्या-2 हो रहा है। दिन प्रति दिन बहुत झगड़ा होता जा रहा है। सुट मरता ही रहता है। सब आपस में लड़ते झगड़ते मरते ही रहते है। तैयारी ऐसी हो रही है जिससे समझ में आता है कि लड़ाई हुई की हुई। दुनियां नही जानती है कि यह क्या हो रहा है। क्या होने का है। तुम्हारे में भी बहुत कम है जो पुरा समझते है और याद रहता है और खुशी में रहते है। इस दुनियां में बाकी तो हम थोड़े ही रोज है। अब हमको कर्मातीत अवस्था में जाना है। हर एक को अपने लिये पुरुषार्थ करना है। तुम खुद पुरुषार्थ करते हो अपने लिये। जितना जो करेंगे उतना ही फल पावेंगे। खुद पुरुषार्थ करना है और औरों को पुरुषार्थ करवाना है। रास्ता बताना है। यह पुरानी दुनियां खलास होती है। अब बाबा आया हुआ है नई दुनियां स्थापन करने। तो इस विनाश के पहले ही उस नई दुनियां के लिये यह बाप की पढ़ाई तो पढ़ लो। भगवानोवाच मै तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। वैरिस्टर कहेगा मै तुमको वैरिस्टर बनाऊंगा। यह तो है भगवानोवाच कि मै तुमको राजयोग सिखाता हूँ। लाडले बच्चों तुमने भक्ति बहुत की है। आधा कल्प तुमने रावण द्वारा दुःख उठाया है ... है ही दुःख

दुःख धाम। रावण राज्य। आधाकल्प रावण राज्य आधा कल्प राम राज्य है नाँ। यह भी किसीको पता नही है कि राम किसको कहा जाता है। राम राज्य कब, कैसे स्थापना हुआ? यह सब बातें तुम ब्राह्मण ही जानते हो। तुम्हारे मै भी कोई तो ऐसे है जो बिलकुल ही नही जानते है। बाप के पास कोई तो सयाने बच्चे होते है। कोई बच्चे फिर नालायक भी होते है नाँ। इनके पास भी ढेर बच्चे है। कितने नाम बदनाम करते है। सर्विस के बदले डिससर्विस करते रहते है। ऐसी डिससर्विस करते है जो बाप से उनका बुद्धी योग तुड़ाये देते है। शास्त्रों मै तो कहानियाँ बना दी है। बाप बैठ यथार्थ रीती अर्थ समझाते है। वास्तव मै बातें सारी यहाँ की ही है। यह भी ड्रामा मै ही नूँध है। ड्रामा अनुसार यह भी होने का ही है। जो पूरा पढ़ते नही है, तो वो क्या करेंगे। औरों को भी खराब कर देंगे। इसलिये ही बच्चों को समझाया जाता है कि बाप को फालो करो। जो अच्छे सर्विसेबुल बच्चे है बाबा के दिल पर चढ़े हुये है, पूछ भी सक्ते हो कि किसका संग करें? बाबा झट बता सक्ते है कि इसका संग बड़ा अच्छा है। बहुत है जो संग ही ऐसे का करते है जिनका रंग ही उल्टा चढ़ जाता है। गाया भी जाता है संग तारे कुसंग बोड़े। कुसंग लगेगा तो एकदम खत्म कर देगा। घर मै भी दास-दासियाँ तो चाहिये नाँ। प्रजा के भी नौकर चाकर सब चाहियेनी। यह सारी राजधानी स्थापन हो रही है। इसमै बहुत विशाल बुद्धी चाहिये। इसलिये ही बेहद का बाप मिला है तो श्रीमत लेकर उसपर चलो। नही तो मुफ्त मै ही पद भ्रष्ट हो जायेगा। इसमै अब फेल हुये तो जन्म जन्मान्तर कल्प कल्पान्तर ही फेल होते रहेंगे। समझा जाता है कि यह पूरा पढ़ते नही है तो क्या पद पावेंगे। खुद भी समझते है कि हम सर्विस को तो करते ही नहीं है। हमसे तो होशियार और बहुत है। होशियार को ही सर्विस के लिये बुलाती है तो जो होशियार है वो ही जरूर ऊँच पद भी पावेंगी नाँ। हम उतनी सर्विस नही करते है तो ऊँच पद पा नही सकेंगे। टीचर को स्टूडेन्ट को

समझा सक्ते है नाँ। रोज पढ़ते है। रजिस्टर उनके पास रहता है। पढ़ाई का और चाल का भी रजिस्टर रहता है। यहाँ भी ऐसे ही है। इसमै फिर मुख्य है योग की बात। योग अच्छा होता है तो चलन भी अच्छी ही रहेगी। पढ़ाई मै फिर अहंकार आ जाता है। इसमै सारी गुप्त मेहनत है- ही याद की। इसलिये ही योग मै नही रहते है। बाबा ने समझाया है कि योग अक्षर निकाल दो। बाप जिनसे

वर्सा मिलता है उनको तुम याद नही कर सक्ते हो। आधा कल्प से तुम याद करते आये हो अब कहते हो बाबा हम भूल जाते है। योग अक्षर ही मुख से निकाल देना चाहिये। योग शास्त्रों का अक्षर है। बाप तुम बच्चों को कहते है कि मुझे याद करो। यह है ही याद की यात्रा। योग की यात्रा कब होती है क्या योग अक्षर ही है हठ योगियों का। इस पढ़ाई मै योग अक्षर है ही नही। यह है याद। तुम बाप को याद नही करते हो। वण्डर है। पति जो गटर मै गिराते है उनको याद करते हो जो तुमको गटर से निकालते है उनको याद नही कर सक्ते हो। बाप कहते है हे आत्माओं तुम मुझ बाप को याद नही कर सक्ते हो। मै तुमको रास्ता बताने आया हूँ। तुम मुझे याद करो तो इस योगाग्नी से पाप भस्म हो जावेंगे। भक्ति मार्ग मै मनुष्य कितने धक्के खाने जाते है। कुम्भ के मेलेमै जाकर कितनी ठंड मै जाकर स्नान करते है। कितनी तकलीफ सहन करते है। यहाँ तो कोई तकलीफ की बात ही नही है। सिर्फ अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। घूमने जाते हो तो एकान्त मै बैठ कर बाप को याद करो। घर मुई ढंग मुई वाले वातावरण मै रहने से वो वातावरण भी खराब हो जाता है। जितना समय मिले बाप को याद करने की प्रैक्टिस करो। फर्स्ट क्लास सच्चे माशूक के आशिक बनो। बाप तो कहते है कि देहधारी का फोटो भी नही रखो। सिर्फ एक ही शिव बाबा का रखो। जिसको ही याद करना है। अगर समझो कि सृष्टी चक्र को ही याद करते रहे तो भी त्रिमूर्ती और गोले का चित्र बहुत फर्स्ट क्लास है। इसमै सारा ज्ञान है। स्वदर्शन चक्रधारी तुम्हारा नाम अर्थ सहित रखा हुआ है। नया कोई यह नाम सुने तो समझ ही नही सके।

यह तुम बच्चे ही समझते हो। तुम्हारे मे भी कोई ही अच्छी रीती याद करते है। बहुत है जो याद करते ही नही है। अपना खाना ही खराब कर लेते है। पढ़ाई तो बहुत सहज है। बाप कहते है साईलेन्स से तुमको साईस पर विजय पानी है। साईलेन्स और साईस रास एक ही है। फलाने मे भी 3 मिन्ट साईलेन्स कराते है। मनुष्य भी चाहते है कि हमको शान्ती मिले। अब तुम जानते हो कि शान्ती का स्थान तो है ही ब्राहमाण्ड। जिस ब्रहम तत्व मे हम आत्मा इतनी छोटी बिन्दी रहती है। वो सब आत्माओं का झाड़ तो वण्डर मनुष्य कहते भी है कि भृकुटी के बीच चमकता है अजब सितारा। बहुत छोटा सोने का तिलक यहाँ बना कर लगाते है आत्मा भी बिन्दी है। बाप भी उनके बाजू मे आकर बैठेगें। साधु सन्त आद कोई भी अपनी आत्मा को नही जानते है। जब कि आत्मा को भी नही जानते है तो परमात्मा को कैसे जान सकते है। सिर्फ तुम ब्राहम्ण ही आत्मा और परमात्मा को जानेते हो। कोई भी धर्म वाले जान नही सकते है। दुनियां भर मे तुम्हारे सिवाय और कोई जान ही नही सकते है। अभी तुम ही जानते हो कि कैसे इतनी छोटी सी आत्मा इतना पार्ठ बजाते है। सत्संग तो बहुत करते है। समझते कुछ भी नही है। इसने भी बहुत गुरू किये है। अब बाप कहते है कि इन सब गुरूओं आद को मारो। यह सब है भक्ति मार्ग कि गुरू ज्ञान मार्ग का गुरू एक ही है। बाकी है भक्ति मार्ग के। डबल सिरताज धारी राजाओं के आगे सिंगल ताज धारी माथा झुकाते है। नमन करते है क्यों कि वो पवित्र है। इन पवित्र राजाओं का ही मन्दिर बना हुआ है। पतित जाकर उनके आगे माथा टेकते है। परन्तु उनको कोई यह पता थोड़ेई है कि कौन है, हम क्यों माथा झुकाते है। सोमनाथ का भी मन्दिर बनाया। अब पूजा तो करनी ही है। परन्तु बिन्दी की पूजा कैसे करें? बिन्दी का चित्र कैसे बनावें। यह है बहुत गुप्त बातें। गीता आद मे थोड़ेई यह बातें है। गीता भी है झूठी। इसलिये ही बाबा ने कहा था कि लिख दो कि झूठी गीता को पढ़ने से भारत नर्कवासी बने है। सच्ची गीता पढ़ने से भारतवासी स्वर्गवासी बनते है। जो खुद मालिक है वो ही बैठ समझाते है। कृष्ण क्या जाने इन बातों को। अभी तुम जानते हो कि कैसे हम इतनी छोटी सी आत्मा मे यह पार्ट नूंधा हुआ है। आत्मा भी अविनाशी है। पार्ट भी अविनाशी है। वण्डर है नां। यह सारा बना बनाया खेल है। कहते भी है नां बनी बनाई.... चिन्ता ताकी कीजिये जो अनहोनी हो जावें। ड्रामा मे जो नूंध है वो तो जरूर होगी। फिर चिन्ता की बात ही नही। फलाना मर गया, आत्मा ने जाकर दूसरा शरिर लिया फिर इसमे रोने की ही क्या दरकार है। वापस तो आ ही नही सकते। आसूं आया नापास हो गये। इसलिये बाप कहते है प्रतिज्ञा करो कि कभी भी रोवेगें नही। परवाह थी पारब्रहम मे रहने वालेबाप की वो मिल गया तो बाकी फिर क्या चाहिये। बाप कहते है तुम अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। मै एक ही बार आता हूं यह राजधानी स्थापन करने के लिये। इसमे लड़ाई आद की कोई बात ही नही है। गीता मे दिखाया है कि लड़ाई लगी, फिर पाण्डव बचे और साथ मे कुत्ता लेकर पहाड़ों पर मर गये। जीत पहनी और मर गये। बात ही नही ठहरती। यह है सब दन्त कथायें। इसको कहा जाता है भक्ति मार्ग। बाप कहते है तुम बच्चों को इससे वैराग होना चाहिये। पुरानी चीजों से नफरत होती है नां। नफरत कड़ा अक्षर है। वैराग अक्षर मीठा है। जब ज्ञान मिलता है तब फिर बुधी का वैराग हो जाता है। सतयुग त्रेता मे तो फिर ज्ञान की प्रालब्ध 21 जन्म तक मिल जाती है। वहां तो ज्ञान की दरकार ही नही रहती। फिर जब तुम वाम मार्ग मे जाते हो तो सीढ़ी उतरते हो। अब है अन्त। बाप कहते है अब इस पुरानी दुनियां से तुम बच्चों को वैराग आना चाहिये। तुम अभी शुद्र से ब्राहम्ण बन रहे हो। फिर सो देवता बनेगें। और मनुष्य इन बातों से ही क्या जानें। भल विराट स्वरूप का चित्र बनाते है परन्तु उसमे नां तो चोटी है नां शिव है। कह देते है देवता क्षत्री वैश्य शुद्र। बस। शुद्र से फिर देवता कैसे कौन बनाते है यह कुछ पता नही है। भक्ति मार्ग है ही माथा घिसने का मार्ग। जहाँ तहाँ पैसे रखो। माथा टेको। बाप अब छुड़ाते है। औम